सरल पालि व्याकरण

विपश्यना विशोधन विन्यास

सरल पालि व्याकरण

विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी

सरल पालि व्याकरण

पुस्तक कोड : **H108**

© विपश्यना विशोधन विन्यास
सर्वाधिकार सुरक्षित

प्रथम संस्करण : अगस्त 2021
द्वितीय संस्करण : फ़रवरी 2026

मूल्य : रु.
Price: Rs.

ISBN 978-81-7414-448-5

प्रकाशक:
विपश्यना विशोधन विन्यास
धम्मगिरि, इगतपुरी - ४२२४०३
जिला- नाशिक, महाराष्ट्र
फोन: ०२५५३-२४४९९८, २४३५५३, २४४०७६, २४४०८६,
८४८४८३४८३७, ८४८४८३७८३५,
८४८४८३९८३७, ८४८४८३१८३५
Email: vri_admin@vridhamma.org
Website: www.vridhamma.org

मुद्रक:
अपोलो प्रिंटिंग प्रेस
जी-२५९, सीकॉफ लिमिटेड, ६९ एम. आय. डी. सी.,
सातपुर, नाशिक-४२२००७, महाराष्ट्र

सरल पालि व्याकरण

विषयानुक्रमणिका

भूमिका 7
संकेत-सूची...9
१. संज्ञाएं **12**
‘अ’कारान्त पुल्लिंग संज्ञा : बुद्ध 12
‘अ’कारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा : फल 13
‘आ’कारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा : लता.. 15
‘इ’कारान्त पुल्लिंग संज्ञा : मुनि.. 16
‘इ’कारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा : अट्ठि...................................... 17
‘इ’कारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा : भूमि 18
‘ई’कारान्त पुल्लिंग संज्ञा : पक्खी 20
‘ई’कारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा : इत्थी 21
‘उ’कारान्त पुल्लिंग संज्ञा : भिक्खु 23
‘उ’कारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा : चक्खु 25
‘उ’कारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा : धेनु.. 26
‘ऊ’कारान्त पुल्लिंग संज्ञा : विदू... 27
‘ऊ’ कारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा : वधू 28
‘ओ’कारान्त संज्ञा : गो... 29
वन्तु-मन्तु प्रत्ययान्त संज्ञा/विशेषण 31
गुणवन्तु (पुल्लिंग) 31
गुणवन्तु (नपुंसकलिंग)... 32
पुल्लिंग संज्ञा : सत्थु.. 34

पुल्लिंग संज्ञा : पितु 36
स्त्रीलिंग संज्ञा : मातु 37
कुछ अनियमित संज्ञाएं 39
राजा 39
अत्त 41
ब्रह्म 43
मन 44
वर्तमान कालवाचक कृदन्त : गच्छन्त 46
पुल्लिंग 46
नपुंसकलिंग 47
२. सर्वनाम 49
अम्ह = मैं 49
तुम्ह = तुम 50
त = वह 52
पुल्लिंग 52
नपुंसकलिंग 52
स्त्रीलिंग 53
एत = यह 55
पुल्लिंग 55
नपुंसकलिंग 55
स्त्रीलिंग 56
सर्वनाम: इम = यह 58
पुल्लिंग 58
नपुंसकलिंग 59
स्त्रीलिंग 60

सर्वनाम: अमु = वह..... 61
पुल्लिंग 61
नपुंसकलिंग 62
स्त्रीलिंग..... 63
प्रश्नवाचक सर्वनाम: क = कौन..... 64
पुल्लिंग 64
नपुंसकलिंग 65
स्त्रीलिंग..... 65
संबंधवाचक सर्वनाम: य = जो 67
पुल्लिंग 67
नपुंसकलिंग 67
स्त्रीलिंग..... 68
सर्वनाम: सब्ब = सब..... 70
पुल्लिंग 70
नपुंसकलिंग..... 70
स्त्रीलिंग..... 71
३. संख्यावाचक शब्द 75
संख्यावाचक सर्वनाम..... 77
एक = एक, अतुल्य, अन्य इत्यादि 77
पुल्लिंग 77
नपुंसकलिंग..... 78
स्त्रीलिंग..... 79
द्वि = दो, उभ = दोनों 80
ति = तीन 82
चतु = चार..... 85

पञ्च = पांच 87
एकूनवीसति - उन्नीस 88
एकूनसतं = ९९ 89
कति = कितने 91
४. क्रिया 93
वर्तमान काल 93
'अ'कारान्त धातुरूप : पठ 93
'आ'कारान्त धातुरूप : किणा 94
'ओ'कारान्त धातुरूप : करो 95
'ए'कारान्त धातुरूप : देसे 97
भविष्यत्काल / अनागत काल 101
'अ'कारान्त धातुरूप : पठ 101
'ए'कारान्त धातुरूप : देसे 103
भूतकाल / अतीत काल 107
'अ'कारान्त धातुरूप : पठ 107
'ए'कारान्त धातुरूप : देसे 108
करो - अनियमित रूप 113
विधिलिङ्ग 115
'अ' कारान्त धातुरूप : पठ 115
'ए'कारान्त धातुरूप : देसे 117
आज्ञार्थ 121
'अ'कारान्त धातुरूप : पठ 121
'ए'कारान्त धातुरूप : देसे 122
विपश्यना साधना केंद्र 126

भूमिका

विपश्यना विशोधन विन्यास द्वारा प्रकाशित 'प्रारंभिक पालि' पुस्तक में पालि व्याकरण संबंधी मूलभूत विषयों पर प्रकाश डाला है। हर पाठ पर आधारित अभ्यास एवं 'प्रारंभिक पालि की कुंजी' पालि व्याकरण के अध्ययन के लिए अत्यंत उपयुक्त है। वर्तमान पुस्तक की रचना 'प्रारंभिक पालि' के 'सहायक' अर्थात पूरक अध्ययन सामग्री के रूप में की गयी है।

यह पुस्तक 'प्रारंभिक पालि' में चर्चित विभिन्न संज्ञा एवं क्रियाओं के रूपों का एक संकलन मात्र है। पुस्तक को अधिक व्यापक बनाने के लिए कुछ अनियमित संज्ञाएं, विशेषण, संख्या तथा क्रियाओं की तालिकाओं को यहां समाविष्ट किया गया है। अधिकतर तालिकाओं के साथ कुछ उदाहरण दिये गये हैं, जिसमें पालि वाक्य अथवा गाथा और उसका हिंदी अनुवाद है। प्रारंभिक पाठों के उदाहरणों में हर संज्ञा की विभक्ति और वचन को दर्शाया गया है, जिससे हिंदी अनुवाद को समझने में सहायता होगी।

प्रारंभिक पाठों में उदाहरणों के रूप में छोटे एवं सरल पालि वाक्य हैं। इन वाक्यों में अधिकतर उन्हीं शब्दों का प्रयोग किया है, जो 'प्रारंभिक पालि' के शब्दसंग्रह में संकलित हैं। नये शब्दों के अर्थ को समझने के लिए वाचक किसी पालि शब्दकोश की सहायता ले सकते हैं। आगे के पाठों के लिए 'तिपिटक' में से कुछ सरल वाक्य और गाथाओं का चुनाव किया है। इन उदाहरणों में हमने अधिकतर वाक्य/गाथा अङ्गुत्तर निकाय के प्रथम तीन निपात और धम्मपद से चुनने की कोशिश की है। तिपिटक के इन खंडों का विपश्यना विशोधन विन्यास द्वारा प्रकाशित हिंदी अनुवाद उपलब्ध है, जहां जिज्ञासु वाचक संपूर्ण सुत्त का अनुवाद पढ़ सकते हैं।

हम आशा करते हैं कि यह 'सरल पालि व्याकरण' और इसमें समाविष्ट सुत्तों की छोटी-सी झलक वाचकों को बुद्धवाणी पढ़ने, समझने और अनुभव पर उतारने के लिए प्रेरक बनेगी।

विपश्यना विशोधन विन्यास